E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

पृथिवी देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

पृथिवीसूक्त अथर्ववेद में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सूक्त में पृथिवी के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पर विशद् विवेचन किया गया है। सत्य, महिमा, ऋत, शक्ति, दीक्षा (यज्ञ का व्रत), तपस्या, ब्रह्म (वेद) और यज्ञ पृथिवी को धारण करते हैं। पृथिवी भूतकाल और भविष्यत्काल की रक्षिका है। पृथिवी अनेक प्रकार की शक्तियों से युक्त औषधियों को धारण करती है। इसी पृथिवी पर साँस लेने वाला और गतिशील जगत् जीवित रहता है। इसी पृथिवी पर पूर्वजों ने विशिष्ट कर्म किया तथा देवताओं ने राक्षसों को आक्रमणपूर्वक भगा दिया। यह पृथिवी गायों, अश्वों और पक्षियों का निवास स्थान है। पृथिवी ऐश्वर्य और तेज प्रदान करने वाली है। यह सारे संसार का भरण-पोषण करने वाली, धन को धारण करने वाली, सभी के स्थित (खड़े) होने के स्थान वाली, अपने हृदय में सुवर्ण को धारण करने वाली, उत्पन्न होने वाले प्राणियों को आराम देने वाली तथा इन्द्र द्वारा रक्षित है। पृथिवी की पहाड़ियाँ, पर्वत, वन सभी के लिए कल्याणकारी होते हैं।

पृथिवी की उत्पत्ति एवं प्राकृतिक स्वरूप- उत्पत्ति से पूर्व पृथिवी की सत्ता समुद्र में जल के भीतर थी। विद्वान् (मनीषी) लोगों ने उसे अपने पराक्रम से प्राप्त किया। पृथिवी का सत्य से आवृत एवं अनश्वर हृदय परम व्योम में स्थित है। पृथिवी का कुछ भाग जलमय है तथा कुछ स्थलमय। उसमें बाधारहित ऊँचे, नीचे तथा समतल भाग हैं। इसी पृथिवी पर समुद्र, नदियाँ तथा अनेक जलाशय भी स्थित हैं। पृथिवी पर झरने भी का प्रवाहित होते रहते हैं। इसमें श्वास लेने वाले एवं गतिशील प्राणी आनन्दपूर्वक रहते हैं। पृथिवी पर ही चारों दिशाएँ हैं, अन्न हैं एवं अनेक कृषक जन हैं। यह पृथिवी, भूरी, काली एवं लाल वर्णों वाली तथा अचल है।

पृथिवी से सम्बन्धित पुराकथाएँ– विष्णु ने इसी पृथिवी को अपने तीन डगों में नापा था। दोनों अश्विनीकुमारों ने भी इसे नापा है। अश्विनीकुमारों से तात्पर्य है सूर्योदय के पूर्व एवं सूर्यास्त के बाद का सन्धिकाल। इन दोनों सन्धिकालों के मध्य पृथिवी प्रकाशित रहती है। विष्णु द्वारा पृथिवी को नापा जाना रूप क्रिया का तात्पर्य है सूर्य द्वारा पृथिवी को प्रकाशित करना। इन्द्र ने भी पृथिवी को शत्रु-रहित कर दिया है। इस पृथिवी पर हमारे पूर्वजों ने अनेक-विध पराक्रमयुक्त कार्य किये हैं।

उपकारिता एवं दानशीलता- पृथिवी, प्राणिमात्र को अपना अमृततुल्य जल उसी भाँति प्रदान करती है जैसे माता अपने पुत्र को दुग्ध प्रदान करती रहती हैं। पृथिवी हमारे लिए उसी प्रकार धन प्रदान करती है जैसे गाय दुग्ध दान करती है। वह सबका समान रूपेण उपकार करने वाली है। माँ जिस प्रकार अच्छे-बुरे सभी बच्चों को प्यार करती है उसी प्रकार पृथिवी भी बिना किसी भेद-भाव के सभी जीवों को धन, अन्न इत्यादि प्रदान करती है। विविध धर्मावलम्बी, विभिन्न भाषाभाषी, अपनी इच्छानुसार आवासगृह बना कर रहने वाले सभी लोगों को धारण करती है। लोग उसके सौजन्य के कारण ही पृथिवी से गाय, अश्व, पक्षी, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य एवं वर्चस्विता की याचना करते हैं।

पृथिवी के धारक तत्त्व - समाज में निरन्तर अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ दोनों ही विद्यमान रहती हैं। परन्तु पृथिवी को सत्य, ऋत, महनीयता, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ धारण किये हुए हैं, अर्थात् पृथिवी पर जब तक उपर्युक्त गुणों की सत्ता बनी रहेगी तब तक पृथिवी टिकी रहेगी अन्यथा वह जलमग्न हो सकती है।

पृथिवी से विविध प्रार्थनाएँ– वैदिक ऋषियों ने पृथिवी से लोकों को विस्तृत करने के लिए तथा समृद्धि प्रदान करने के लिए विविध प्रकार से प्रार्थनाएँ किया हैं। गौवों और अन्नों को प्रदान करने के लिए, वर्चस्व के लिए तथा जल और तेजस्विता से सम्पृक्त करने के लिए विविध प्रकार की प्रार्थनाएँ भी की गयी हैं।

अन्त में ऋषि पृथिवी से प्रार्थना करता है कि हे पृथिवी! मेरे लिए तुम उसी प्रकार भूमि विस्तृत कर दो जैसे माता पुत्र के लिए दूध प्रदान करती है।